

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ यजमान नमस्तुते ॥ यथा कुरु नया चक ॥ अथादिवा
॥ देवसानादि ॥ चन्द्र सिद्धि कुरु मका नाना यथादि
॥ अथाद्यन ॥ अथ नमस्तुते ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॐ नमस्तुते ॥
काव ॥ अथादि ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॐ नमस्तुते ॥
दकी ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॐ नमस्तुते ॥ ॐ नमस्तुते ॥

श्री गणेशाय नमः
ॐ नमस्तुते

1704

I

62

कृष्णाय नमः ॥ अस्तु यद्गुरु ॥ दशदिग्धनं ॥ जैज्जौं दूं रूठ व
ऊय ऊ ल सा दा ॥ व जी क व न ॥ ॥ जैज्जवल म के ल के
ल म व ल डौं डौं दूं रूठ सा दा ॥ दश मि द्वा न ॥ ॥ जैज्ज
कि नि श वि च का कृष्णाय नमः ॥ अस्तु यद्गुरु ॥ जैज्जन मा रु
ग व ति ह क म ला य जो धा ऊं गु सार्थे या यू ॥ जैज्ज ऊं कु बि
कार्ये कु ल दी या ये जां ग ऊं न्ये या यू ॥ जैज्जौं डौं दूं व व्वे नः

निषदं धामधमाये यायू ॥ उं ५ या न भूया न मूखा वद
 नूया ये दृष्टा नूना मि कारये यायू ॥ उं ५ वां चूं म हं ना त्रिको
 ये दूं शी क नि सृ ये था यायू ॥ उं ५ कि नि २ वि च्च का द्द ल
 ये द ४ क व न ला ये यायू ॥ के रं वा स ॥ ॥ उं ५ न मा रु
 ग व नि शा उ द्ध व का ये यायू ॥ उं ५ दूं कृ वि का ये था यूर व
 का ये यायू ॥ उं ५ दूं दूं दूं व च्च न नि खे था द दि ल व का ये

यायू ॥ जें ५ था व अथा नाम खिव दू नू या ये थो उरु नव का
ये यायू ॥ जें ५ चूं चूं मरु ना वि का ये थो यष्टि मव का ये या
यू ॥ जें ५ कि नि २ वि च था य ना य न व कु ये यायू ॥ वरुं या
स ॥ ॥ जें ५ न मा रु ग व नि रु ल म ला ये दौ धो रु द या
य यायू ॥ जें ५ सुं वृ वि का ये वृ ल द्या ये दौ गि व म स्या

हा ॥ जें ५ दौं दौं दूं व च व नि ख दूं थो नि खा ये वो ष ठ ॥ जें ५
था व अथा व अथा नाम खिव दू नू या ये दूं थो क व चा ये उं
दू ॥ जें ५ चूं चूं मरु ना वि का ये दौ न रु गु या ये व ष ठ ॥
जें ५ कि नि २ वि च का रु ला ये दू ४ अथा ये रु ठ ॥ अं ग
ना म ॥ जें ५ रुं नि खा स न यायू ॥ जें ५ सुं गि व स न

यादू कां॥ जें॥ कें ललाट यादू कां॥ जें॥ मंत्र कायया॥ जें॥
लहद यायया॥ जें॥ वें ना होया॥ जें॥ वें गुं झया॥ जें॥
यें जानोया॥ जें॥ उं उं यादद यायया॥ नवासाद ह यास
॥ ॥ नवाउल याययूजा॥ जें॥ ऊल याययादू कां॥ जें॥
यां॥ आनद गकि रे नवानद वीनाधिययें मों॥ थोऊया

उरुदाव काययादू कां॥ जें॥ ऊं ददयादिषउ रमण॥ आवा
हनादि रधनू मूदां दर्जयनू॥ गायत्री॥ जें॥ कृद्वि काये विप्र
दकूल दयाये धामही मनः कृद्वि यादयानू॥ ॥ मिऊल
याययूजा॥ ॥ नवाऊर्य याययूजा॥ जें॥ ऊं ऊं दूयसू
न२ याव२ नव ननू२ नूयव न२ युव न२ करु२ वम२ दम

२ विव २ दानय २ विद्यानय २ विधि २ दं ३ रुट काशी मः
ला कामात्रिका विचयादुकी ॥ ॐ ५ मूं ॥ आनन्द गकि रं
नवानन्दशामा विद्याना ऊर्ध्वनी ॥ ॐ ५ मूं ॥ शा अर्थया
रुट्टात्रकाययादुकी ॥ ॐ ५ दों दद ॥ ॐ ५ मूं ॥ यादिष
उरु नयूजा ॥ आवाहनादिया निमूदा ॥ दर्शनयन ॥

ॐ नि अर्थयाशयूजा ॥ रुमशुद्धि ॥ ॐ ५ दों दों मूं मूं मूं
मूं दों दों ॥ ॥ आत्मयूजा ॥ ॐ ५ वन्दनयादुकी ॥ ॐ ५
दों अकनयादुकी ॥ ॐ ५ श्रीवात्ररुमयादुकी ॥ ॐ ५ मूं उन
मारुनियादुकी ॥ ॐ ५ मूं यूर्ययादुकी ॥ ॐ ५ मूं यादुकी ॥
मारुनीरुय ॥ माननीय १०७ ॥ ॥ यश्रवलि ॥ ॐ ५ दों

वटुकनाथाय वलिं गृह्णन् गृह्णन् गृह्णन् ॥ जैं जैं कौं कौं
या लाय वलिं गृह्णन् गृह्णन् गृह्णन् ॥ जैं जैं यां यां गिनी वलिं
गृह्णन् गृह्णन् गृह्णन् ॥ जैं जैं युं सिद्धि वा मूलाय वलिं गृह्णन्
गृह्णन् गृह्णन् ॥ जैं जैं गंगाय नय वलिं गृह्णन् गृह्णन्
गृह्णन् ॥ जैं जैं नादि गङ्गा नीदधु यानि विन्दु गङ्गा

मूलां दर्शयन् ॥ विन्दु विय ॥ जाय स्मर ॥ गोर्या श्यूरं कू
मात्रं गगन मल वनं कुरु यं या गिनी श्रु वा मूलां लुं वलु
नूयाद् विमरु यरु मां विद्युदात्रं गङ्गा ॥ यस्या शोर्द्वय
दोया मिष मधू वलि हा न विं गं रुषि नाङ्ग चक गं य
ऊकानी ददधु विन सतुं रुकि मूकिं यदा ना ॥ ॥

नमो ॥ नमो नमो ॥ श्रीसंवत्सरान्तरावर्तनयाय ॥ तर्ज
नीदधुयानि विद्मगजमुद्रांदर्शयन् ॥ विरगव्ययासा ॥
वंजमुद्रादयादिषुञ्ज न्यासा ॥ ॥ आसनं ॥ वंज आश
नकययायू ॥ वंज अनकासनायेयायू ॥ वंज स्कंदायायू ॥
वंज अकलाययायू ॥ वंज नायाययायू ॥ वंज यद्राययायू ॥

वंज यशयायू ॥ वंज कलाययायू ॥ वंज कर्त्तिकायेया
यू ॥ वंज सिंहसनायेयायू ॥ वंज महिषासनायेयायू ॥ वं
ज गुंरासनायेयायू ॥ वंज निगुंरासनायेयायू ॥ वंज
कीयश्चयनासनायेयायू ॥ ॥ ध्यान ॥ कामयूयम
हान्तायूगनादिषुवर्चसा । लाकावसनिराकाता

प्रादुर्भासमयला। सर्वत्र विविजंगी, शुभिकारुग
विग्रहा। अष्टादशगुजादिद्या, नानाप्रह्वरणाद्यना।
नानावसधवादीकनायविद्यन। खड्गयागं
कृष्णसद्य, कयालं कलिगधुजं। वर्या गङ्गा नथाद्ये
नवमं वववयदा। रुठकंधनूयागं व, खड्गमंसक

मधुर्ल। गूलगदलवीलाव, गदारिथारुवकव। मधु
वववयित्वा, सिगवृष्येलाहीमला॥ ध्यानवृष्ययायू
॥ आवाहनादियूजा॥ ॥ जेजुं शुभमहाकववीग
द्वयथोयोद्रां समर्थयामिनमः॥ नव, अर्थमानावम
नं चदन, सिद्धव, अरुग, यूर्या॥ ॥ जेजुं शुभमहाकववीग

श्रीमहादेववीरुद्धस्वनीरुद्राविकाये श्याऊरलियूष्य
यादकीयूज्यामि॥ ३ ॥ जेंजं मूं हृदयादिषड्भुनयू
जा॥ वति॥ जेंजं अथात्रकांथथात्रकांथात्रथात्रमत्रदूं
दूं सर्वगः सर्वसर्वदूं सः कां वृद्धवृथदृष्ट्यायू॥ जेंजं जें
वज्रकृदिनामुं उलाकाकर्मलीकी कामांगडावनीकां

मूं महाकाककावलीजें सो सः श्यायायू॥ जेंजं नभारुग
वनीमुं कृदि कायेकांकांकांथात्रअथात्रअथानामखि
दूं दूं किलि२ विचयायू॥ जेंजं नभारुगवनीमुं कृदि
कायेमूंमूंमूं हृदयनभअथानामखिदूं दूं किलि२
विचयायू॥ जेंजं रुगवनि सिद्धमुं मुं कृदिकांकांकां

ॐ स्वर्गोत्तमं वा न ज्ञाया न मखि ॐ ॐ किं नि २ वि च या यू ॥
नमो बुद्धा व्यादि यूजा ॥ ॐ ॐ रुं सा सनाय या यू ॥ ॐ ॐ व या स
नाय या यू ॥ ॐ ॐ म यू न सनाय या यू ॥ ॐ ॐ ग न ज सनाय
या यू ॥ ॐ ॐ म हि या सनाय या यू ॥ ॐ ॐ ग ज सनाय या
यू ॥ ॐ ॐ य न सनाय या यू ॥ ॐ ॐ सिं हा सनाय या यू ॥ ॥

ॐ ॐ व म्मा र्थे वि च या यू ॥ ॐ ॐ कें मा रु ष्व न वि च या यू ॥
ॐ ॐ वें को मा न वि च या यू ॥ ॐ ॐ टें वे यू वा वि च या यू ॥
ॐ ॐ गें वा ना रु वि च या यू ॥ ॐ ॐ यें ॐ न्दा य ली वि च या यू ॥
ॐ ॐ यें वा म्मु वि च या यू ॥ ॐ ॐ सें म रु ल ष्व वि च या यू ॥
ॐ नि बु म्मा व्या दि ॥ ॥ नमो बुद्धा व्यादि यूजा ॥ ॐ ॐ रुं

ऊयायेयायू ॥ उँऊ कँ वीऊयायेयायू ॥ उँऊ गँ अङि नाये
यायू ॥ उँऊ लँ अयनाङि नायेयायू ॥ उँऊ मँ ऊँरु न्येयायू ॥
उँऊ लँ सँरु न्येयायू ॥ उँऊ वँ भाहा न्येयायू ॥ उँऊ यँ आ
कषर न्येयायू ॥ नवं वलि ॥ नू निऊयादियूजा ॥ ॥
उँऊ डौ वरु ४ षट्ठिया गिनी गरल आ नमयायू ॥ वलि ॥

उँऊ डौ वरु ४ षट्ठिया गिनी गरल आ वलि गट्ट २ सर्व
शार्कि कू व २ मम सिद्धि कू वरु नू दू रू हू हाहा ॥ यानि
मूडा ॥ विन्दू नाग र्यो लं ॥ नू निगुय्ये स्वमीयूजा ॥ ॥
नगा उमरु रें ववयूजा ॥ उँऊ डौ दू दयादि षउंग आ
स ॥ आसन ॥ उँऊ आधा वग कययायू ॥ उँऊ अनका

सनाययाय ॥ नैऋत्यं दाययाय ॥ नैऋत्यं कलाययाय ॥ नैऋत्यं
नाययाय ॥ नैऋत्यं दाययाय ॥ नैऋत्यं दाययाय ॥ नैऋत्यं
कलाययाय ॥ नैऋत्यं कलाययाय ॥ नैऋत्यं कलाययाय ॥ नैऋत्यं
नाययाय ॥ नैऋत्यं नाययाय ॥ नैऋत्यं नाययाय ॥ नैऋत्यं
नाययाय ॥ नैऋत्यं नाययाय ॥ नैऋत्यं नाययाय ॥ नैऋत्यं

ययाय ॥ नैऋत्यं ययाय ॥ नैऋत्यं ययाय ॥ ॥ ध्यान ॥ नीला
ऊनमहाकंठं चिन्मयं तदिगम्यते । मूलमालाधरं
दं गङ्गायाम् वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ध्यानयुक्तं नमयाय ॥ आचार
नादिरिगुप्तमूढा ॥ ॥ नैऋत्यं ध्यानयुक्तं नमयाय ॥ नमः
रुद्राय वायवायै समर्थयामि नमः ॥ नमः अर्धस्नाना

ॐ ॐ किलि २ विञ्च यायू ॥ ॐ ॐ नमि सिद्ध ॐ ॐ
कृत्ति क ॐ ॐ ॐ खरगने या न जया न मूखि ॐ ॐ
किलि २ विञ्च यायू ॥ धनं वलि ॥ ॥ नमो नमि
नामा दियू जा ॥ ॐ ॐ ॐ जि ना ग ले न वा य यायू ॥ ॐ
ॐ नू नू ले न वा य यायू ॥ ॐ ॐ उं चं लु ले न वा य यायू ॥

ॐ ॐ का ध ले न वा य यायू ॥ ॐ ॐ उ न न ले न वा य
यायू ॥ ॐ ॐ नं कया ली स ले न वा य यायू ॥ ॐ ॐ उं ली
ष ल ले न वा य यायू ॥ ॐ ॐ ॐ स हा न ले न वा य यायू ॥
धनं वलि ॥ ॥ नमो रु रु का दियू जा ॥ ॐ ॐ रु रु
क ले न वा य यायू ॥ ॐ ॐ शि यू न न क ले न वा य यायू ॥

ॐ ॐ अग्निव गात्रं वाययाय ॥ ॐ ॐ अग्निदिक्कां ववा
ययाय ॥ ॐ ॐ कात्रां ववाययाय ॥ ॐ ॐ कायां लीं
ववाययाय ॥ ॐ ॐ कयां द ववाययाय ॥ ॐ ॐ रीं
मय्य ववाययाय ॥ ॐ ॐ हाठकं ववाययाय ॥ ॐ
ॐ अत्र ववाययाय ॥ ॐ ॐ भयं सून ववाय

याय ॥ ॐ ॐ अत्र वलिं गद्र २ खाहा ॥ ॐ ॐ ऊं ऊं ऊं
ऊं ऊं ऊं नां ललिं मूठ सं कां गद्यो न दद्या रुयान कउ
द्वं कं गसून का द क उया ल व का द न । सर्व विद्या ना
गय २ वलिं गद्र २ खाहा ॥ आवा रुनादि रिगून मूडां
दर्शय ७ ॥ ॥ विष्णुमात्रं काया लिय उहलि ॥

वलिमात्रथन॥ ॐ कं कुरुया लायवलिं गुरु २ सा
हा॥ ॐ वां वरु कना थायवलिं गुरु २ सा हा॥ ॐ गं
गलय गयवलिं गुरु सा हा॥ ॐ दूं म हा का लायव
लिं गुरु २ सा हा॥ ॐ झूं धा सिद्धि वा मधु ये वलिं
गुरु २ सा हा॥ ॐ कनूं वी वग्म गा नायवलिं गुरु

गुरु २ सा हा॥ ॐ आ का ग वा वि णी वा यू यी २० वलिं गुरु
गुरु २ सा हा॥ ॐ स चं था दे व था वलिं गुरु २ सा हा॥
ॐ स चं था रु न था वलिं गुरु २ सा हा॥ ॐ रु ठु का
दि गर ल था वलिं गुरु २ सा हा॥ ॐ सु सि ना झा दि
गर ल था वलिं गुरु २ सा हा॥ ॐ व द्वा द्वा दि मा रु ग

704

I

१८॥ वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ५ वृद्धवल्मुदिमरलाया
वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ५ ऊयादिमरलाया गृह्ण २ स्वा
हा ॥ ॐ ५ रुक्मवः १ स्वा १ वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ५ मूं
मूं ॥ ममद्रिनायकां लुथं ज्ञायूः कामनार्थं
वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ समयवलिं

दद्या ७ ॥ ॐ ५ सर्वयोरभययी भनि द्वा नायकावमवदा
कजायक ७ मंदाह सर्वदिग्गमसंस्थिता ॥ यागिनी
यागवीवद्वा १ सर्वगुरुसमागता ॥ ॐ ५ पूर्वमहावक्त्रं
शीनारथाववदामम ॥ यरुक्ता सासनदेवी सुववदा
वृनवना ॥ सर्वसिद्धिसादा म देवि नमो रुवसदा

वीवालां या गिनी नात्र य विषनि मही नल । गुरु ज न
मलिंद वी स म या या स म ल क । धूमि म मि म न ४ यू
हि मां स म दा छि जी वि र्ग । निरु गं उ मु द र्श नां या गि
नी ग व स क ल । कू क का दि क स द्या दि द त्रि मि र्श द र्शि
ना । निरु गं य मु द र्श नां या गि नी ग व स क ला । डा का
२

ना दि षू य या ० सु य मा ना य का र्हि ना ३ डा ष धी धा रु
सं दा हा द ज्ञा सु वि द सा सू य । म ही या ना ल व द्वा र्श स
व र्श ना न क न वू य । या गि नी या ग य का मा । स र्श मि ष
कु सा ध का । वी न क र्म सु वी न द्या ४ स र्श मि ष नि द व ना
४ सि द्धा श्र य क या र्था । सा ध का दि नि सा यि न म न

गवदाथग्रामवा अगव्यावा सविद्वत्वा यीकूर्यंकवः
कवा समगानमाहमलुल। नानावृयधमा न्यधि वठज
विद्विधानिय॥ गवसर्वयिसुसुवलिगुद्रुमसः
दा॥ सवत्सगगाहंनघां सर्वमगल्लयद॥ यालद्वः
ऊमयाकर्म यत्कविकामियत्कर्म। वलियर्थयदान

नसंरुष्टाममयिनिकावसर्वकर्मलिसिद्धिनु सर्वदा
षयसानुभा गिवगिकियसादाभ कलावानेनमाय्य
हं॥ निसमयवलि॥ ॥ आवाहनादिथानिमू
दादग्य॥ वदन सिधुन अकन नानायुष्य॥ गभा
धुय॥ निस अगुनीगुनु नीयेव कयूवंमृगनारुका

धूयवासधसर्वेषां धूयाययुगिगृह्यगं॥ ॥ दीप॥
नं॥ सुयकागयदद्यायं सर्वगुणिमिनायहं । सवाक
त्यननंशानि दद्याययुगिगृह्यगं॥ ॥ नैवय॥
नं॥ अन्नमालावसंदिद्यं नसेवधिसमचिर्गं । मया
निवदिर्गं दुर्गं गृह्यलयवमश्वरी॥ ॥ रुतना

मूल॥ नं॥ नाविकलंयखड्गं नगाभूलंयवमंगथा ।
अमदातिमजासीनरुताययुगिगृह्यगं॥ ॥ नैवय॥
लनामूलययधूयदायनेवकादिसंकल्यउयधोकि
गं॥ अरुगंधादि॥ अन्नसंकल्य अचिदममु॥ ऊल
धवाय॥ ॥ आय॥ नं॥ कौकुरयावायसाहा॥

ॐ ह्रीं क्लीं साहा ॥ ॐ ह्रीं क्लीं साहा ॥ ॐ ह्रीं क्लीं साहा ॥
०८ ॥ मधुललाह ॥ श्रीसंज्ञा ॥ त्रिदश्या ॥ महासाया ॥
ॐ नमो भगवते ॥ उजायुकादि विरच्य सगणयमि
रुगं यी ० नयात्रमध्यं गुरुगुरुगुरुकणीयशुयमिस्र
त्रमा रुवती मरुयुका ॥ वो द्वाद्यादर्शनानी यत्रमयत्र

मदा स्रस्यमाशयसिद्धा वद्मा व्याद्यानिगारुं गलपः
मिददुर्के १ सयुगार्कानमामि ॥ गुरुगणीयद्रसंस्तुगणि
वदनधवा लाकि कासुडसाहा शकारुसुदिवश्चा ल
सिखगणलिकं वरुकरुं सुवर्क ॥ दक्षयववयः
द्ववमिदु लधनू १ यागखद्वाङ्ग कृष्ण गूलं मोङ्गयवा

॥ रुयमयिचरुऊ, नां सदावामरुऊ ॥ शुद्ध स्वामी
हारागां, निर्णययुयकोवनी ॥ नयालसु सदानोमि
रुयधावानुकाविणी ॥ कामाखाववदादवी, नीवयव
गवासिनी ॥ सादवीऊगनांमाना, यानिमूडनभाभुम
॥ वोद्वानामार्थगावा, लमसिरुगवनी, शाभुनांजिवा
वा

खायकाकाकोलिकानां, रुगसकलविय, ल्यदिनीसऊ
नानां ॥ गायत्रीवेदिकानां, युक्तुमिनिमिसदा, विष्णुना
सांख्यकानां, श्रयंवालीवृद्धवी, वद्विविधिरुलदादवि
दृग्जलमव ॥ कायनवावाभनभदियेवा, वृष्टान्म
नावायुक्तुमिसवौरो ॥ कनामियरुसकलंउरुखं

गुह्यं श्वरीं विस्मयं यासि ॥ ॐ मिश्रायुधं श्वरीं का
ईसमाय ॥ ॥ अङ्गनादि ॥ नमस्तुते ॥ ॥
समयं यथा ॥ वलिसदाकाद ॥ दवर्कं द्याय ॥ नर्यनया
य ॥ ॥ गंगा दूधियूजा ॥ वायिसंवनं सिद्धं न अ
द्वय ॥ शिवा अलि ॥ ॐ कालि श्वरीं श्वरीं श्वरीं

श्वरीं नमः ॥ ३ ॥ कलषकाया वयाय सनातन ॥ ३४
अस्माय दद ॥ ॥ ॥ धनयातसयूजा ॥ यशुद काय
संस्तुया ॥ यशुल खनकाय ॥ वदनादि नमस्तुते ॥ सम
यनकं न्या नकायकं यशुमनु कन ॥ अद्वय सया नम
॥ मायश ॥ ॐ यशुया गाय विद्महे विश्व कर्माय

धीमहि नना जी वयथा दया ७॥ कलख काया ववाक
याय ॥ अशादि ॥ ह्याय ॥ गित्वाय ॥ साशुयुयउ
य ॥ साहमाया ॥ दवकुदकिणमया ॥ अशुगभादि ॥
वाकनयुय ॥ नयनयाय ॥ आशुयुया नदकिणवि
य ॥ समयकाय ॥ गहन ॥ अविमय ॥ वन्दन, सिंधु

सगुन माहनीयुय ॥ खानकाकाय ॥ आसविकाय ॥
वलिःथाय ॥ सूर्यसादिथाय ॥ काशु कवकानं ॥ ७
ननिशाशुयुयनीयुजा विधिसमाय ८॥ ॥

ॐ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ कदम्ब
व ॥ ॥ त्वानिवमूखादग्नान्नाममहसहस्रकै।यून
॥ यक्षामहादेवाभयावकलरुव ॥ ॥ देवदेव
महादेव बुद्धिमत्तामूर्तम् । गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥

शुभममहायुक्ता गुरुभ्यो नमः । सर्वथायह
वैयर्थ्यं नाम्नामस्तुर्वर्तनम् ॥ ३ ॥ शुभिनस्तु
वृद्धं शुद्धागमयानिमवया गुरुभ्यो नमः ॥
नमः कीलकं तथा ॥ ४ ॥ गुरुदासिनिगकिमुवि
नियागः प्रकिरितः ॥ ५ ॥ गुरुभ्यो नमः ॥

आगुआर्हिनागिनी ॥ ५ ॥ दविदवस्वदादवा, दवगं
धर्वसविना। लावगी लासगी तावा, कनूलादि स्थसं निता
॥ ६ ॥ कासिकलावगी कान्ता, कमनीयाकजासना। रुव
वीली वला रुडा, रुवानी रुनिदायिनी ॥ ७ ॥ पार्थनि
यवर्गलाव, रुडमानागराश्वनी। चलि काचलि का

चन्दा, चन्मगुतवलिनी ॥ ८ ॥ श्वर्णवलावात्रमुखी
चिहिनी नयश्वतिनी। ॐ द्वाली ॐ श्वनी श्वनी ॐ
डीजेनावगस्मिना ॥ ९ ॥ चन्दनालियसर्वा श्रीजानकी
नगनचिनी। वासुर्माशानिनी चर्मा, यवर्मा चपुना
यिका ॥ १० ॥ चपुवगी चपुत्रया, चपुमृगुविरुक्ती

विश्वेश्वरी विश्वमाता नदिनी गमनी गुरु ॥ ११ ॥
॥ गङ्गा गङ्गादावरी गङ्गायी गङ्गायत्री गङ्गासना मातु
श्वरी मरुविद्या मातु माया मनीषिनी ॥ १२ ॥ सिद्धि
त श्रीमहात श्रीमन्मन्दिनिवासिनी कलेश्वरी
कलानन्दा कलुली कम्पदा कला ॥ १३ ॥ कामेश्वरी

काममाता कामदाकमलेश्वरी राधिकावसि
कामाया सर्वकल्याणतृपिणी ॥ १४ ॥ नन्दारुगय
गिरुया धवलीधर्मवद्विनी ज्ञानवन्धकमालाया
जुमला जूमलेश्वरी ॥ १५ ॥ पूर्ववन्दुनिबोडी तूडा
ली तूडमाहिनी वाक्की वक्त्रमयी वक्त्रा नन्दतृपानव

ध्वनी ॥ ११ ॥ सावीशी रंगो न मीले मी यच्छमी न सनी न
नी । न जिनी गुवन न नी न वनी य म ला च ना ॥ १० ॥
नाजिव वा नू व द ना गुच्छ म गुल व किनी । अछा रु
व न न ना म्ना गुच्छ ध्व म ह म न ॥ १८ ॥ रंग य नि
यं पु य त्व न न व स्त हा न्य की किनी । य २० द्या वा ० य द्या

यिष्ट पू या द्या यि मान व ॥ १२ ॥ सर्व या य रु नै यू थं
न यु का थं क थं व न ॥ य ४ य २० त्या न नू स्का य जी वा न
निय न ४ गु वि ॥ २० ॥ गुच्छ ध्व या यि सा द न व स्त ना
स्त क वि रु व न ॥ २१ ॥ निधी स्त द मू ना र थ हि म
व न् य २० गुच्छ ध्व नी अछा रु न न न ना म स्का रु स मा र्क ॥

१॥ अ॥ ध्वनवानाह ॥ अथादि ॥ उयमन्य ॥ ग॥ शास्त्रम
महं नुसिंहदासनामार्हं निखिलान् कामान् यार्थि
युष्मकसौताम्यमृदि धनधान्ययुग्मे योशादि शयी
नानायु कामनया ॐ हृदयवगानूयन खरगवनका
मतार्थः श्री ३ ॐ हृदयवगानुष्म ध्वनीयोनियुष्मक

शकुन्तलार्थः ॥ अहिः ॥ कन्दयुष्मः ॥ गगः ॥ सहस्रयनि
मिनेनयात्रय यावत्समायदिनयर्थकः श्री ३ ॐ हृ
दयवगानुष्म ध्वनीयुजयिथ ॥ विष्णु ३ ॥ वेद सन
मागका सम्वत्सर्ग ॥ द्वारुतस्वान्ननक क्काया रुना
सम्बन् ८१४ कारिकशुक्ल युग्मे माया निरर्थ ॥





